के वि वि आयोग
CERC

सौदामनी

जनवरी – मार्च, 2018 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–16

संदेश

प्रदीप कुमार पुजारी
अध्यक्ष

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि हमारे केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग द्वारा वर्ष 2014 से नियमित रूप से आंतरिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। निस्संदेह इस पत्रिका के प्रकाशन से पाठकों को आयोग की समस्त गतिविधियों, कार्यकलापों व उपलब्धियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। हम सभी जानते हैं कि हिन्दी में भारत की सामासिक संस्कृति को आत्मसात और अभिव्यक्त करने की अद्भुत शक्ति मौजूद है। वर्तमान में हिन्दी अपनी सुग्राह्यता और वैज्ञानिकता के कारण वैश्विक स्तर पर भी स्थापित हो चुकी है। समय की मांग को देखते हुए वर्तमान में हिन्दी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं लोकप्रिय हो रही हैं। इसके साथ ही इंटरनेट व सोशल मीडिया पर भी हिन्दी का प्रयोग व प्रसार निरंतर तेज गति से बढ़ रहा है।

यह भी अत्यंत हर्ष का विषय है कि ''सौदामनी'' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पठनीय, रोचक व स्तरीय होती है। पत्रिका की सुरूचिसंपन्नता, गुणवत्ता एवं पठनीयता के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वाह करती रहेगी।

इस अंक के सफल प्रकाशन क लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक – 19 जनवरी, 2018

मार्च, 2018 को समाप्त राजभाषा कार्यान्वयन की समिति की तिमाही बैठक दिनांक 19.01.2018 को आयोग के सचिव एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री सनोज कुमार झा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। अध्यक्ष महोदय ने अलग–अलग प्रभागों के प्रभारी से हिन्दी प्रगति की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समस्त कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करते हुए हिन्दी की सरलता, लोकप्रियता व व्यवहारिकता को केन्द्र में रखा जाए। इसके साथ ही विभागीय प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए सभी स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न योजनाओं पर भी विस्तार से विचार–विमर्श किया गया। समिति के सदस्यों ने सामूहिक रूप से यह विचार व्यक्त किया कि नवोन्मेषी कार्यक्रमों की शुरूआत की जाए ताकि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण हो। अध्यक्ष महोदय ने इस सुझाव से सहमति व्यक्त की और निर्देश दिया कि इस संबंध में निश्चित रूपरेखा तैयार कर शीघ्र अनुकूल कार्रवाई की जाए। इस बैठक में समिति के समस्त सदस्यों ने सहभागिता की।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान विचार विमर्श

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

जनवरी – मार्च, 2018 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–16

25 जनवरी, 2018 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

भारतीय निर्वाचन आयोग एवं भारत सरकार के आदेशों के अनुपालन में केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में दिनांक 25 जनवरी, 2018 को प्रातः 11.00 बजे राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोग के वरिष्ठ अधिकारियों तथा समस्त स्तर के कर्मियों द्वारा सामूहिक रूप से प्रतिज्ञा का वाचन किया गया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिज्ञा–वाचन

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

जनवरी – मार्च, 2018 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–16

वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन – 21 मार्च, 2018

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं समस्त स्तर के स्टाफ सदस्यों में अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने के उद्देश्य से 21 मार्च, 2018 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के आयोजन का उद्देश्य कार्यालय में हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना है।

इस प्रतियोगिता के विधिवत् शुभारंभ के लिए श्री पी.के. अवस्थी, संयुक्त प्रमुख (वित्त) को आमंत्रित किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री अवस्थी ने इन प्रतियोगिताओं के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि प्रतियोगिता का विषय ''इच्छा मृत्यु'' अत्यंत सामयिक एवं प्रासंगिक है। उन्होंने समस्त प्रतिभागियों को विषय की गंभीरता व महत्ता से परिचित करवाते हुए विषय को स्पष्ट भी किया। निर्णायक के रूप में साहित्यकार श्री श्रवण कुमार उर्मलिया को आमंत्रित किया गया। इसके साथ ही निर्णायक मण्डल में श्री कमल किशोर, सहायक प्रमुख (विधि) एवं राजेन्द्र प्रताप सहगल का सहयोग रहा। वाद–विवाद प्रतियोगिता का सफल संचालन श्री राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी ने किया।

वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन : कुछ झलकियां

के वि वि आयोग
CERC

सोदामिनी

जनवरी – मार्च, 2018 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–16

तुलना दुख है तो प्रतिस्पर्धा विकास है

चिन्तनपरक लेख

मनुष्य की सहज स्वाभाविक वृत्ति है कि वह किसी क्षेत्र विशेष के दो सफल व्यक्तियों की उपलब्धियों की तुलना अवश्य करता है। हालांकि हम इस तथ्य से सभी सहमत हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताएं और प्राथमिकताएं अलग–अलग होती हैं तथापि हम गाहे–बगाहे एक ही क्षेत्र के दो सफल व्यक्तियों की तुलना करने में कोई कोताही नहीं बरतते। यही तुलना जब सामाजिक धरातल से उतरकर व्यक्तिगत सफलताओं–असफलताओं के दायरे में सिमट जाती हैं तो यह वृत्ति दुःख का स्रोत बन जाती है। चूंकि कई बार यह तुलना राग–द्वेष, ईर्ष्या आदि भावों से अनुप्राणित होती है इसलिए हमारी कमतरी का एहसास करते हुए हमें दुख से भर देती है। तुलना का यही भाव और अधिक बढ़ जाने के बाद व्यक्ति में परपीड़क होने की अस्वस्थ वृत्ति को भी जगा देता है।

इसके ठीक विपरीत प्रतिस्पर्धा का भाव एक स्वस्थवृत्ति है जो दूसरे की उपलब्धियों से जलन का भाव पैदा नहीं करती और अपने को अधिक मेहनत के लिए प्रोत्साहित करती है। तुलना संकीर्ण मनोवृत्ति से पैदा होती है इसलिए दुखदायी है जबकि प्रतिस्पर्धा उदारता व समान भाव से उत्पन्न होती है इसलिए जीवनदायी एवं उत्साहवर्द्धक है। इन दोनों मनोभावों के सूक्ष्म अंतर को समझने के लिए हमें यह तथ्य भी ध्यान में रखना होगा कि हमारी मनोभावनाओं का अर्थ सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर भिन्न–भिन्न हो जाती है। तुलना रोक और ठहराव है जबकि प्रतिस्पर्धा चुनौती के लिए तैयार करती है एवं कठिन परिश्रम के लिए बाध्य करती है।

इस तथ्य से भला कौन असहमत होगा कि सफलता के पीछे मात्र मेहनत ही नहीं बल्कि और भी कई कारक या पहलू काम करते हैं। यह कह कर हम परिश्रम के महत्व को कम नहीं कर रहे अपितु यह भी अपने में अकाट्य तर्क है कि हमारे पास मेहनत के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इसके बावजूद हमारे सामने ऐसे कई उदाहरण हैं जहां एक को कम मेहनत में ही सफलता मिल जाती है तो दूसरे को अथक परिश्रम के बावजूद सफलता नहीं मिलती। सुविधा की दृष्टि से हम इसे किस्मत या भाग्य कह देते हैं और इसके पीछे छिपे अदृश्य कारणों का पता लगाने से छुटकारा पा लेते हैं। इसी दृष्टि दोष या सीमा के चलते हम तुलना करते समय न तो पूरे हालात का जायज़ा ले पाते हैं और न ही सम्यक दृष्टिकोण से काम लेते हैं। यही एकांगी विचार तुलना को प्रभावित करने में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। तुलना करने वाला दूसरे की अपेक्षा अपनी स्थिति को बेहतर पाकर आनंदित होता है तो किसी स्थिति विशेष में दूसरे की अपेक्षा खुद को कमतर पाकर दुखी होने लगता है। इसीलिए कहा जाता है कि हम अपने दुख से दुखी नहीं है बल्कि दूसरे के सुख से दुखी हैं। यह दोनों ही स्थितियां ईर्ष्या व पर पीड़न के विकारों को प्रश्रय देती हैं। अतएव तुलना सकारात्मक से अधिक नकारात्मक हो जाती है। उदात्त–आध्यात्मिक चेतना हममें अपनी स्थिति के प्रति स्वीकार का भाव जगाती है और तुलनात्मक दृष्टि से परहेज करते हुए समभाव से अपनी स्थिति को अंगीकार करती है।

अपने जीवन में तुलना के स्थान पर प्रतिस्पर्धा को महत्व देने वाला व्यक्ति अपनी असफलता से क्षुब्ध व दुखी होने के बजाय उन कारणों–कारकों का तटस्थ एवं सूक्ष्म विश्लेषण करेगा जिनसे सफलता में बाधा उत्पन्न हुई। प्रतिस्पर्धा अपनी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करती है और हर तरह की चुनौती को खुले मन से स्वीकार करती है। यही कारण है कि प्रतिस्पर्धा स्वस्थ भाव है और पुरुषार्थ के सान्निध्य से अपनी त्रुटियों को दूर करने की विजय गाथा है। तुलना पुंसत्व है तो प्रतिस्पर्धा पुरुषत्व। सामाजिक दृष्टि से तुलना भले ही कमोबेश सकारात्मक भाव रखती है लेकिन आध्यात्मिक धरातल पर तुलना नकारात्मक एवं एकांगिता की ही पक्षधर साबित होती है। जबकि प्रतिस्पर्धा हर दृष्टि से सकारात्मक एवं स्वस्थ दृष्टिकोण की परिचायक है। तुलना दो व्यक्तियों की रूचियों–प्राथमिकताओं को अनदेखा करते हुए अपने दृष्टिकोण को अग्रणी रखती है इसलिए इसमें एक हद तक पूर्वाग्रह भी झलकता है जबकि प्रतिस्पर्धा दूसरे की क्षमताओं से प्रेरणा लेकर खुद को संवारने का बीड़ा उठाती है और अनुकूल परिणामों के लिए अपेक्षित परिश्रम को प्रश्रय देती है। इन्हीं मूलभूत भेदों के चलते कहीं न कहीं हमें अपनी मनोग्रंथियों में ही राग–द्वेष से पीड़ित रखती है और हमारी स्वाभाविक क्षमताओं को ही कुतरने लगती है। इसके ठीक विपरीत प्रतिस्पर्धा सफलता–असफलता को संकीर्णताओं से हमें उबार कर दोनों ही हालातों को स्वीकार करने की ताकत देती है। यही कारण है कि सामाजिक व आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से तुलना त्याज्य है और प्रतिस्पर्धा वरणीय है।

(डॉ. राजेन्द्र सहगल)
राजभाषा अधिकारी

संरक्षक
ए.के.सिंघल
सदस्य

www.cercind.gov.in

संपादक मंडल
सनोज कुमार झा, सचिव
पी. राममूर्ति, सहायक सचिव
कमल किशोर, सहायक प्रमुख
राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी

कृपया इस पते पर अपनी प्रतिक्रिया भेजें :
केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली–110001
Email : info@cercind.gov.in